विचार वक्तव्य

जगदलपुर, बुधवार 07 फरवरी 2018

www.dandakaranyasamachar.com

अमृत वाणी

जिस प्रकार मैले दर्पण में सूरज का प्रतिबिंब नहीं पड़ता उसी प्रकार मलिन अंत: करण में ईश्वर के प्रकाश का प्रतिबिंब नहीं पड़ सकता। -रामकृष्ण परमहंस,

बाज नहीं आ रहा पाकिस्तान

पाकिस्तान अपने विध्वंसकारी गतिविधियों से किसी भी तरह से बाज नहीं आ रहा। आए दिन आंतकवादियों के साथ उसके संबंधों के चिट्ठे तो खुल ही रहे हैं पर उससे संभवत: अब उसे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि उसका आंतकी समर्थक चेहरा अब किसी से छिपा नहीं है। सारी दुनिया उसे भलीभांति पहचान गई है लेकिन भारतीय सीमा पर अनावश्यक रूप से गोली बारी कर वो जो तनाव की स्थिति निर्मित कर रहा है वो अच्छे संकेत नहीं है। आए दिन संघर्ष विराम का उल्लंघन कर भारतीय जवानों और नागरिकों को निशाना बनाना उसकी फितरत बन गई है। सबसे आश्चर्य की बात यह है कि दो सारी हरकतें वो भारत की ओर से बिना किसी उकसावे में करता है।

रविवार को भी पाकिस्तान ने बिना किसी उकसावे के जम्मू कश्मीर के राजौरी जिले में नियंत्रण रेखा के पास भारी गोलीबारी की जिसमें सेना के एक कैप्टन सहित चार जवान शहीद हो गए। एक लड़की समेत तीन अन्य भी घायल हो गए हैं। बिना किसी कारण या उकसावे में पाकिस्तान ने भारतीय चौकियों को निशाना बनाया। पाकिस्तान की जब तब ऐसी हरकतों के कारण सरकार को सीमा के पास स्थित लगभग 100 स्कूलों को बंद करना पड़ रहा है। इससे बच्चों को कितना नुकसान हो रहा है इसका सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है।

यह तो निश्चित है कि हरबार की तरह इस बार भी पाकिस्तान को अपनी करनी का माकूल जबाव मिलेगा। केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने स्पष्ट तौर पर कहा है कि उन्हें भारतीय सैनिकों की बहादुरी पर पूरा भरोसा है और वे पाकिस्तान को यथोचित जबाव जरूर देंगे। यह मात्र कहने की बात नहीं है। इससे पहले भी भारतीय सैनिकों ने अपने साथियों के शहादत का गिन गिन कर बदला लिया है। इतना जरूर है कि अब तक भारत अपने भलमानसिहत और संयम का हर संभव प्रदर्शन कर रहा है जिसके कारण पहला हमला हमारी ओर से नहीं होता। हर बार पाकिस्तान संघर्ष विराम का उल्लंघन कर उकसावे वाली हरकत करता है और भारतीय सेना केवल उसका जबाव देती है। यह अलग बात है कि पाकिस्तान को अपने किए से अधिक नुकसान उठाना पड़ता है।

चिन्ता का प्रश्न तो यह है कि भारत कब तक अपना संयम बरकरार रख सकेगा। तमाम विरोध के बावजूद पाकिस्तान की ओर से संघर्ष विराम का उल्लंघन और हमारी सैन्य चौकियों को निशाना बनाने का कम लगातार जारी है। जम्मू कश्मीर में आंतकवादियों को वित्त पोषण से लेकर उनकी घुसपैठ कराने के कम में भी जुटा हुआ है। अत: आज नहीं तो कल अगर भारत भी भड़क जाए तो आश्चर्य की कौन सी बात होगी। अमरीका भी बार-बार पाकिस्तान को सचेत करता आ रहा है पर उस पर कोई असर नहीं। इसलिए नतीजा भुगतने के लिए उसे तैयार तो रहना ही होगा।

राजकाज

कौन टॉप और कौन पॉट

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किसानों को अपनी प्राथमिकता बताते हुए उन्हें टॉप की संज्ञा दी यानी टी फॉर टोमैटो टमाटर आँ फॉर ऑनियन प्याज और पी फॉर पोटैटो आलू। प्रधानमंत्री की इस अंग्रेजी टर्म का ट्विटर पर जवाब देते हुए कर्नाटक कांग्रेस की नेता दिव्य स्पंदना रम्या ने ट्वीट किया और कहा कि रम्या ऐसा तब होता है जब आप पीओटी अर्थात गांजे के नशे में होते हैं। रम्या का यह कहना ही था कि भाजपा ने पलटवार करना शुरु कर दिया। भाजपा के प्रवक्ता जीवीएल नरसिम्हा राव ने ट्वीट किया और कहा कि देश के अधिकतर लोग और हमारी पार्टी के सदस्य प्रधानमंत्री सहित यह नहीं जानते कि आप किस संबंध में उल्लेख कर रही हैं लेकिन आपके नेता इसे तुरंत पकड़ लेंगे आपने अपनी घटिया टिप्पणी से भारत के लोगों का अपमान किया है।

क्या राहुल वाकई विकल्प हैं मोदी के

कांग्रेस पार्टी के प्रवक्ता रणदीप सिंह सुरजेवाला का कहना है कि देश में नरेंद्र मोदी का विकल्प सिर्फ कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी हैं। इस प्रकार जहां सुरजेवाला ने राहुल को बेहतर विकल्प निरुपित किया वहीं उन्होंने कहा कि देश में आज दो मॉडल्स हैं। एक है मोदी मॉडल जो कि दिन में छह बार कपड़े बदलते हैं। दूसरा राहुल मॉडल है। वो सादगी से रहते हैं और अपनी बात साफ साफ कहते हैं। इस प्रकार देखा जाए तो जिस सादगी की बात करते हुए मोदी प्रधानमंत्री की कुर्सी पर विराजमान हुए आज वहीं सादगी राहुल के कर्म और वचन में दिखाई दे रही है, तो सवाल करने वाले कह रहे हैं कि ऐसा तो नहीं कि कुर्सी मिलने के बाद वो भी मोदी की तरह बदल जाएं और स्वदेशी और गरीबों की भलाई की बजाए विदेशी कंपनियों की भलाई और बड़े कारोबारियों के हाथों की कठपुतली बन विदेशों में रहने लगें।

प्राय: देखा गया है कि आये दिन कोई ना कोई धोखा और जालसाजी का शिकार हो रहा है। यह आम बात हो गयी है कि किसी के एटीएम से पैसे पार हो गये, किसी ने डेबिट कार्ड से पैसे निकाल लिए, किसी के बैंक से पैसे निकाल लिए। आए दिन मोबाईल फोन पर अनजान फोन कॉल्स आते रहते हैं, अगर इन कॉल्स को आप ने उठाया तो अगला व्यक्ति कुछ ना कुछ आपसे पूछता रहेगा और आपकी जानकारी एकत्रित करता रहता है।

बढ़ते डिजीटलीकरण के आड़ में धोखा-ठगी और जालसाजी से बचाव जरूरी

जैसे कि किसी अन्जान व्यक्ति का फोन आता है और कहता है कि मैं अमुक बैंक से बात कर रहा हूं, आपके खाते में आधार लिंक, मोबाईल को आधार से लिंक, आपका एटीएम बंद हो गया है उसे तुरंत अपडेट कराना अनिवार्य है, अगर आप नहीं कराएंगे तो आपका खाता बंद कर दिया जाएगा या आपका एटीएम रिजेक्ट या डिएक्टीवेट कर दिया जाएगा। आप अभी एक्टिव या लिंक करा सकते हैं, इसके लिए आपको कुछ जानकारी देनी होगी। इस प्रकार वह अपने बात से आपको जानकारी देने के लिए उकसाऐगा या डराऐगा। वह आपको अपनी चिकनी चुपड़ी बातों में आने के लिए मजबूर करता है और आपसे क्रमवार जानकारी लेते जाता है। आज की भाग भरी जिन्दगी और जागरूकता की कमी से व्यक्ति उसे सब जानकारी बता देता, जो उसे नहीं बताना चाहिए, उस जानकारी को वह अनजान व्यक्ति को बता देता है, जिससे उसके बैंक खाते से तुरंत सारी रकम निकाल ली जाती है।

इन सभी बातों से यह पता चलता है कि लोग बढ़ते डिजीटलीकरण से एक तरफ खुश है, क्योंकि इससे काम बहुत तेजी से और घर बैठे किया जा सकता है। तो दूसरी तरह दुखी भी हैं। देखा जाए तो पहले जहां घंटो पेसे ट्रान्सफर करने के लिए लगते थे, वो अब चुटकी में हो रहे हैं। बिना पैसे निकाले मोबाईल और कम्प्यूटर इंटरनेट के माध्यम से पहाचंह हो रहे हैं। शासन द्वारा सभी व्यक्तियों के आधार कार्ड बनवाये जा रहे हैं। इस आधार कार्ड के माध्यम से बढ़ते कालाबाजारी, रिश्वतखोरी, जमाखोरी को बंद कराने के उद्देश्य से पूरे भारत में आधार लिंकिंग कार्य सभी क्षेत्रों में हो रहे है, इस यूआईडी नंबर के आधार पर बैंक, राशन दुकान, फोन, जमीन रजिस्ट्री, स्कूल, कॉलेज, हॉस्पिटल, ऑफिस इत्यादि में सभी जगह आधार लिंकिंग का कार्य हो रहा है। आप कहीं भी शासकीय, अर्द्धशासकीय या प्राईवेट हो सभी कार्यों के लिए आए आधार कार्ड अनिवार्य हो गया हैं। आधार कार्ड, पेन कार्ड, स्मार्ट कार्ड, राशन कार्ड, पासपोर्ट कार्ड, वोटर कार्ड आदि का चलन बढ़ गया है, लेकिन इस सबसे कारगर और एक कार्ड है आधार कार्ड। आधार कार्ड जमा कर व्यक्ति सभी कार्य आसानी से करवा सकता है। केन्द्र शासन द्वारा एक यूनिक आई डी के माध्यम से पूरे भारतवासी को सुविधा व पहचान कार्ड करने वाले लोगों से बचने के लिए यह फॉर्मूला निकाला है। एयर टिकिट, रेल टिकिट या बस टिकिट सब जगहों में आधार कार्ड से बुकिंग की जाती है।

आज कल पहचान लॉटरी लगने के नाम पर भी फोन आता हैं। फोन पर कॉल्स या मैसेज के माध्यम से आप 1 करोड़, 5 करोड़ डालर जीत चुके हैं, इस तरह से पहचान मैसेज आते है और आप तुरंत इस नंबर पर कॉल करें और अपना पैसा ले जाए। ऐसे फोन कॉल आने पर लालच में आकर अज्ञात व्यक्ति को फोन करते हैं, तब अज्ञात व्यक्ति कहता है कि आपके जीते हुए पैसे विदेशी डालर में है आपको इंडियन रुपये में बदलवाने के लिए पैसे अज्ञात बैंक खाता में जमा करना होगा, ताकि आपका पैसा आपके खाते में ट्रांसफर कर दिया जाएगा। इस प्रकार की दलीले देकर वह अपना बात मनवाता है। व्यक्ति पैसे के लालच में आकर वहीं करता है जो अज्ञात व्यक्ति उसको करने के लिए कहता है और अज्ञात व्यक्तियों द्वारा पहचान लाटरी के नाम पर ठगी किया जाता है।

कभी इश्वरीस कंपनी के पहचान अधिकारी बनकर, कभी चेहरा पहचानों इनाम पाओं, नौकरी लगाने के नाम पर ठगी तो कभी घिट फंड कंपनी, जेवर चमकाने के नाम पर, पहचान बाबाओं से ठगी, तो कभी नोटों का पहचान बंडल देकर ठगी, लोन देने के नाम पर ठगी हो रही है। इन तमाम प्रकारों से लोग ठगी का शिकार हो रहे है। जरूरत है सतर्कता और जागरूकता की।

आजकल टॉवर लगाने के नाम पर ठगी जोर-शोर से चल रही है। लोगों को अखबारों और फोन पर विज्ञापन एवं मैसेज के माध्यम से लुभाया जा रहा है। घर, ऑफिस, मैदान, खाली प्लाटों पर फोन टॉवर लगवाते और हर महीने लाखों रुपये पाएं। इस प्रकार की पहचान मैसेज और विज्ञापनों में आकर कई लोग ठगी का शिकार हो रहे हैं। अज्ञान व्यक्तियों द्वारा कहा जाता है कि आप मोबाईल टॉवर लगा कर लाखों कमा सकते हैं। आप मोबाईल टॉवर लगाने हेतु चहालित हुए हैं। टॉवर लगाने हेतु अग्रिम राशि अमुख बैंक खाता में जमा कराऐं। फिर आपको पंजीयन होने के 2 दिन बाद पंजीयन प्रति के साथ पूरा पैसा आपके खाते में जमा करा दिया जाएगा। इस प्रकार पहचान टॉवर लगाने के नाम पर लूट रहें है लोगों को।

अधिकतर घर पर गृहणियां अकेली होती है, ऐसे में ठगी करने वाले लोग, कुछ सामग्री बेचने के नाम पर, कोई अज्ञात बच्चा रोता हुए मिलना, तो सोना-चांदी चमकाने वाले, पहचान बाबाओं का आना, पहचान सेल्समेन, पहचान फेरीवाला हो सकते हैं। इस सबसे सावधान होने की जरूरत है। हो सकता है कि दो सभी पहचान लो पर इससे सतर्क और सावधान अवश्यक रहें। कोई अज्ञात व्यक्ति झूट बोलकर, आपकी थोड़ी जानकारी प्राप्त कर आपसे पैसे लूट सकते हैं और आपको परेशानी में भी डाल सकते हैं। इस लिए आप अजनबी पर बिल्कुल विश्वास ना करें।

अपने बैंक खाता एवं एटीएम से संबंधित जानकारी किसी को भी नहीं बतायें। इस तरह के कॉल्स आने पर तत्काल अपने बैंक शाखा से संपर्क कर सकते हैं। जब भी आप एटीएम से पैसे निकालने जाए तो सतर्क होकर जाए और सावधानीपूर्वक पैसे निकालें। अनजान व्यक्ति से कभी अपना एटीएम पिन शेयर ना करें और ना ही अपना एटीएम उनके हाथ में दें। हो सकता है कि वह पलक झपकते आपका एटीएम बदल दें। एटीएम कार्ड से पेमेंट करते समय आप स्वयं कार्ड स्वेप मशीन का उपयोग करें, पासवर्ड छुपाकर अंकित करें और कार्ड उपयोग होने के बाद कार्ड को पुन: उल्टा कर स्वेप करें, इससे किसी अन्य के द्वारा आपके कार्ड का दुबारा उपयोग नहीं किया जा सकेगा। किसी भी अज्ञान फोन कॉल्स को ना उठाऐं। फोन पर आए हुए अन्जान मैसेज का रिप्लाई ना करें और ना ही फोन कॉल्स का जवाब दें। हो सके तो अपनी बात कम शब्दों में कहते हुए फोन काट दें। अगर बार-बार आपके फोन पर अज्ञात व्यक्ति या अज्ञात कंपनी का फोन आए तो इसकी शिकायत तत्काल पास के पुलिस थाना पर अवश्य करें। सतर्क रहें, सावधान रहें।

आप कभी भी रहें चाहे घर, ऑफिस, दुकान, बाजार, सड़क पर हो। ठगी करने वाले लोग सभी जगह से सकते हैं। आपको सिर्फ पहचानने की जरूरत है। आप अपने सुविवेक का उपयोग अवश्य करें। जागरूकता का परिचय देते हुए आप किसी भी तरह की ठगी का शिकार से बच सकते हैं।

इस सभी प्रकार के ठगी से बचने के लिए ज्यादा पढ़े-लिखे या अनुभव की आवश्यकता नहीं। व्यक्ति चाहे तो अपने सूझबूझ और आत्मबल, आत्मविश्वास से अज्ञात व पहचान व्यक्ति के मंसूबे को जांच-परख सकते हैं और सतर्कता और सावधानीपूर्वक इससे निपट भी सकते हैं। सब थोड़ी जागरूकता दिखावे और ठगी से बचे। जितना हो सके डिजीटलीकरण का उपयोग करें। विकासित भारत को और सशक्त एवं समृद्धिशाली बनाने के लिए आप डिजीटलाईजेशन को बढ़ावा देने के लिए इसके भागीदारी बने, ताकि भारत देश अन्य देशों की तुलना में हर क्षेत्र में आगे बढ़ सके। जय हिन्द-जय भारत-जय छत्तीसगढ़।

तेजबहादुर सिंह भुवाल

(ये लेखक के अपने विचार है)

यह शायद पहला मौका है जब किसी देश में डिप्रेशन को लेकर अलग मंत्रालय बनाया गया है। इंग्लैण्ड की प्रधानमंत्री थेरेसा ने अकेलेपन और डिप्रेशन की समस्या से निपटने के लिए वहां के खेल व सिविल सोसायटी मंत्री ट्रैसी क्राउच को इस मंत्रालय का प्रभार सौंपा है। अकेले इंग्लैण्ड में 90 लाख लोग अकेलेपन व डिप्रेशन के शिकार है। लेबर पार्टी के सांसद जो कोक्स ने समूचे इंग्लैण्ड में अकेलेपन और डिप्रेशन के खिलाफ मुहिम चलाई और इस मुहिम का परिणाम ही रहा है कि इंग्लैण्ड में अलग से मंत्रालय अस्तित्व में आया है। ऐसा नहीं है कि यह इंग्लैण्ड की ही समस्या है अपितु यह विश्वव्यापी समस्या है और विश्व स्वास्थ्य संगठन चेताता आ रहा है। युवाओं में तेजी से बढ़ती डिप्रेशन की बीमारी को लेकर विश्व स्वास्थ्य संगठन का अध्ययन न केवल चेताने वाला है अपितु गंभीर चिंता का विषय भी है।

डिप्रेशन का इंग्लैण्ड में अलग मंत्रालय

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार 2020 आते आते डिप्रेशन दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी बीमारी हो जाएगी। हांलाकि पहली बड़ी बीमारी हार्ट की बीमारी का भी एक प्रमुख कारण डिप्रेशन ही है। बदलती जीवन शैली और भागम भाग की जिंदगी में आज का युवा डिप्रेशन का शिकार होता जा रहा है। युवाओं में मनोरोग तेजी से पांव पसार रहा है। देश दुनिया में मनोरोगियों की संख्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है। डिप्रेशन के कारण कुंठा, अवसाद, चिड़चिड़ापन यहां तक की आत्म हत्याओं का ग्राफ भी दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। और अधिक कमाने, और अधिक सहेजने की होड़ में युवा खोता जा रहा है। फिर वातावरण भी इसी तरह का बनता जा रहा है। संयुक्त परिवार का विघटन, नौकरी में लक्ष्य प्राप्ति के लिए अत्यधिक दबाव, अनावश्यक प्रतिस्पर्धा, दूसरे के सुख से दुबले होना आदि ऐसी प्रवृत्तियां विकसित होती जा रही है जिससे व्यक्ति कुंठाग्रस्त होकर डिप्रेशन का शिकार होता जा रहा है। अकेलेपन और डिप्रेशन की समस्या से युवाओं के साथ साथ बुजुर्ग भी झेलते जा रहे हैं। बदलती पारिवारिक स्थितियां बुजुर्गों को एकाकीपन की और धकेल रही है और यह एकाकीपन डिप्रेशन का रुप लेता जा रहा है।

एक रिपोर्ट के अनुसार कार्य क्षेत्र पर अत्यधिक दबाव और टारगेट आधारित वेतन भत्तों के चलते कारपोरेट क्षेत्र में काम करने वाले युवा डिप्रेशन की चपेट में सबसे अधिक आ रहे हैं। कारपोरेट क्षेत्र के यही कोई 42 फीसदी युवा तेजी से डिप्रेशन का शिकार होते जा रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य दिवस पर जारी एक रिपोर्ट न केवल चेताने वाली है अपितु कार्यक्षेत्र में बढ़ते दबाव के कारण युवाओं में पनप रही कुंठा और निराशा भी दर्शा रही है। आज की युवा पीढ़ी खेलने-कूदने के दिनों में जिस तरह से डिप्रेशन का शिकार हो रही है वह किसी भी देश की भावी पीढ़ी के लिए उचित नहीं माना जा सकता है। सबसे मजे की बात यह है कि ग्लेमर या मोज मस्ती की मानी जानी वाली नौकरियों में ही सर्वाधिक डिप्रेशन का शिकार होना पड़ रहा है। आज सबसे ज्यादा डिप्रेशन का शिकार मीडिया खासतौर से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से जुड़े युवा, दूरसंचार, आईटी, केपीओ, बीपीओ और मार्केटिंग से जुड़े क्षेत्र के युवा हो रहे हैं। यह सब तो तब है जब आज की युवा पीढ़ी स्वास्थ्य और खान-पान के प्रति अधिक सजग होने लगी है। जिम जाना या भोजन में कोलेस्ट्रॉल, प्रोटिन, कार्बोहाईड्रेट या अन्य पोषक तत्वों की अधिक जानकारी रखने के बावजूद फास्टफूड का बढ़ता मोह स्वास्थ्य को बुरी तरह से प्रभावित कर रहा है।

पैलप की भी सर्वे रिपोर्ट ने विकास की ओर तेजी से बढ़ते भारत के नियंताओं को सोचने को मजबूर कर दिया है। पैलप की सर्वे रिपोर्ट के अनुसार देशवासियों खासतौर से प्रामीणों में निराशा की भावना अधिक बढ़ रही है। बदलते सामाजिक-आर्थिक ताने-बाने के कारण निराशा बढ़ना स्वभाविक भी लगती है। एक समय था तब हमारा आदर्श साधा जीवन-उच्च विचार होता था। जीवन की सीमित आवश्यकताओं के कारण जीवन जीने का अलग ही अंदाज होता था। दैनिक आवश्यकताएं सीमित होती थी। दिखावे को सराह नहीं बल्कि व्यंग के रुप में देखा जाता था। व्यक्ति की पहचान उसकी सादगी और विचारों से होती थी। आज स्थिति उलट है। अमीर व गरीब के बीच की खाई बढ़ने के साथ ही अमीर व अमीर के बीच ही दिखावे की अंतहीन प्रतिस्पर्धा होने लगी है। तेरी कमीज मेरी कमीज से अधिक उजली कैसे ? इसी में मरे जा रहे हैं हम आज। गैलप की रिपोर्ट में खुलासे के अनुसार पिछले वर्षों में ही सोच में काफी बदलाव आ गया है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने विज्ञापनों के माध्यम से जो सब्जबाग दिखाया है उसके कारण लोगों में जीवन जीने को लेकर असंतोष अधिक बढ़ा है। ग्रामीण क्षेत्र में सुविधाओं का विस्तार हुआ है। मनरेगा जैसी योजनाओं और सिंचाई के साधनों का विकास, कृषि में आधुनिक यंत्रों के उपयोग से पैदावार तो बढ़ी है पर बंटवारों के कारण कृषि जोत कम होने और कृषि लागत की तुलना में जिंसों का लाभकारी मूल्य उत्पादक किसान को नहीं मिलने से कृषि लाभ को सौदा नहीं माना जाता। नए रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन, बढ़ती महंगाई की तुलना में सीमित आय व जीवन स्तर में बदलाव के कारण निराशा अधिक बढ़ रही है। गाँवों में पारंपरिक उद्योगों की जगह नए उद्योगों ने ले ली है।

कारपोरेट कार्मिकों के सामने सबसे बड़ी चुनौती प्रतिस्पर्धा के कारण तनाव में रहना है। एकल परिवार, कार्यक्षेत्र परिवार से दूर होने के कारण अकेले रहने, लिव इन रिलेशनशीप, बाजार में प्रतिस्पर्धा और ऋण कृत्वा घृतं पिबेत की संस्कृति के कारण तनाव बढ़ रहा है। आज घर की परिभाषा ही बदल गई है। अब तो परिवार के भी मानक बदल गए हैं। रिश्ते नाते पीछे चले गए हैं, डिप्रेशन रिलिज नहीं होने के कारण मस्तिक के किसी कोने में तनाव के अंश सुशुप्त अवस्था में रह जाते हैं और इससे कुंठा, अनिद्रा, झुंझलाहट, ब्लडप्रेशर और ना जाने कितनी ही बीमारियों को पाल लेते हैं। टीवी चैनलों में एक के बाद एक साजिशों का दौर तनाव का नया कारण बनता जा रहा है। एक समय था जब घर को पूरा समय नहीं देने पर बड़े बुजुर्ग कहा करते थे कि घर को सराय समझ रखा है क्या वहीं आज नौकरी पेशा लोगों के लिए घर सराय से अधिक नहीं रह जाता है। ऐसे में आज की पीढ़ी के भविष्य को देखते हुए डिप्रेशन का कारगर समाधान खोजना होगा नहीं तो सामाजिक विघटन को कोई नहीं रोक पाएगा।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा,

(ये लेखक के अपने विचार है)

पद्मावत पर विरोध की राजनीति क्यों?

कल परिवार के साथ 'पद्मावत' देखी। इस फिल्म को लेकर जितने शोर-शराबें, बवाल अथवा अफवाहों ने देश की जनता को गुमराह किये हुए था, फिल्म देखकर लगा कि इस देश की जनता को बेमतलब कितना गुमराह किया जा सकता है। जिन राजपूतों ने और उनकी करणी सेना इस फिल्म का व्यापक विरोध किया, आन्दोलन चलाया, हिंसा की, तोड़फोड़ की- यह सब राजपूतों की आन-बान-शान को धुंधलाने के नाम पर किया गया। जबकि संजय लीला भंसाली की इस फिल्म को देखकर लगा कि इसमें ऐसा कुछ नहीं है। यह फिल्म देखकर और इसमें फिल्माये एवं दिखाये गये मेवाड़ के गौरव एवं राजपूतों की जीवनशैली को देखकर हर व्यक्ति गौरवान्वित हुआ। उस महान् संस्कृति एवं इतिहास के प्रति नतमस्तक भी हुआ और गद्गद् भी हुआ। प्रश्न है कि फिर विरोध क्यों हुआ? आन्दोलन क्यों हुआ? क्यों सुप्रीम कोर्ट के आदेशों की अवहेलना हुई? क्यों विभिन्न राज्य सरकारों ने इसे अपने प्रांतों में प्रदर्शन नहीं करने के फरमान जारी किये? आखिर कौन लोग इस फिल्म के नाम पर इंसानों को बांटने की कोशिश कर रहे थे। यदि राजनीतिक स्वार्थ के लिये यह सब किया गया है तो अब ऐसी स्वार्थी राजनीति पर अंकुश लगना ही चाहिए। एक नई किस्म की वाग्मिता पनप रही है जो किन्हीं शाश्वत मूल्यों पर नहीं बल्कि भटकाव के कल्पित आदर्शों के आधार पर है। जिसमें सभी नायक बनना चाहते हैं, पात्र कोई नहीं। भला ऐसी सामाजिक व्यवस्था किस के हित में होगी?

'पद्मावत' के विरोध की राजनीति को देखते हुए यही लगा कि सब अपना बना रहे हैं, सबका कुछ नहीं। और उन्माद की इस प्रक्रिया में एकता की संस्कृति का नाम सुनते ही हाथ हथियार थामने को मचल उठते हैं। मनुष्यता रूरू, अमानवीय और जहरीले मार्गों पर पहुंच जाती है। बहस वे नहीं कर सकते, इसलिए हथियार उठाते हैं। संवाद की संस्कृति के प्रति असहिष्णुता की यह चरम सीमा है। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि हम बिना पड़ताल के, बिना सत्य का साक्षात्कार किये भावनाओं में बह कर राष्ट्रीय सम्पति का नुकसान करने लगते हैं, जनहानि कर देते हैं। बिना ठोस प्रमाण के उत्पात मचाने वालों ने आखिर किन अराजक शक्तियों के इशारों पर लम्बे समय तक यह हिंसक आन्दोलन चलाया? जबकि फिल्म देखने के बाद मुझे लगा कि यह राजपूत संस्कृति का, उनके संस्कारों का, उनके सिद्धान्तों का, उनकी आन-बान-शान का, उनके इतिहास का, उनके नारी सम्मान का इतना भव्य, मनोरम, सटीक एवं प्रभावशाली प्रदर्शन पहली बार हुआ है, जिससे राजपूत जीवनशैली एवं संस्कृति का महिमामंडन ही हुआ है। राजपूतों की संस्कृति पर फिल्में बहुत बनी है, लेकिन संजय लीला भंसाली बधाई के पात्र हैं कि उन्होंने मेवाड़ की संस्कृति, सती प्रथा को, मेवाड़ के आत्म-सम्मान को, राजपूतों की मान-मर्यादा को खूबसूरती से दर्शाया है। उन्होंने राजपूतों की वीरता तथा बलिदान को गौरवान्वित किया है और इसे देख कर प्रत्येक राजपूत ही नहीं देश का हर नागरिक गर्व महसूस कर रहा है।

'पद्मावत' के विरोध ने अनेक प्रश्न खड़े किये हैं। जो आत्म-मंथन का अवकाश चाहते हैं। क्यों राजपूत करणी सेना ने इतने दिनों के विरोध के बाद अपने बवाल को वापस लेने का फैसला किया है? इतना ही नहीं, करणी सेना ने एक कदम आगे बढ़ाते हुए अपने सदस्यों को राजस्थान में इसे रिलीज करवाने में मदद करने को कहा है। पूरा साल लोग करणी सेना के विरोध प्रदर्शनों से लेकर आयोजित बंद-हिंसा-आन्दोलन आदि को देखते-सुनते व झेलते रहे थे। सर्वत्र तेहरवीं सदी की रानी पद्मावती की ही बातें हो रही थीं। जबकि इस फिल्म में रानी पद्मावती और अलाउद्दीन के बीच कोई भी सीन नहीं है। इसमें ऐसा कुछ नहीं है जो राजपूत समाज के इतिहास और भावनाओं को नुकसान पहुंचाए। फिर इतना विरोध क्यों एवं किनके इशारों पर हुआ। गलतफहमियां पनपनी नहीं चाहिए, क्योंकि इसी भूमिका पर विरोधी विचार जनम लेते हैं, विरोध का वातावरण बनता है। क्या कारण बना कि सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के बावजूद वाहनों को आग के हवाले करने, ट्रक ड्राइवरों के साथ मारपीट से लेकर स्कूल बसों पर पथराव तथा जलाने के प्रयास जैसी हिंसा एवं बर्बरता होती रही। चाहे भाजपा हो या कांग्रेस राजनीतिक जगत में इस हिंसा को लेकर पूर्ण चुप्पी इनके गिरते स्तर और वोट राजनीति का प्रमाण है।

ललित गर्ग

(ये लेखक के अपने विचार है)